पी.जी (संस्कृत)

तृतीय सेमेस्टर

इकाई- 3

प्रस्तुतकर्ता- डा. संजय कुमार चौबे

सहायक आचार्य

संस्कृत विभाग

एच. डी. जैन कॉलेज, आरा

अन्यद्भावाश्रयं नृत्यम्। (व्याख्या)

दशरूपककार ने रूपक के दश भेद माने हैं। इसमें भाण भी है। कुछ विद्वानों का कहना है कि नृत्य के डोम्बी श्रीगदित भाण भाणी प्रस्थान रासक काव्य में से भाण को जैसे ननाट्य के दश भेदों में परिगणित किया गया है वैसे ही शेष छह को भी रूपक के ही भेदों में परिगणित किया जाना चाहिए। इस प्रकार रूपक के दस ही भेद होते हैं। दशधैव ऐसा निश्चयात्मक कथन समुचित नहीं जान पड़ता क्योंकि उक्त कारण के आधार पर तो दूसरे रूपक भी सिद्ध होते हैं । इस शंका का उत्तर देते हुए ग्रंथकार धनंजय कहते हैं भाव पर आश्रित रहने वाला नृत्य रसाश्रित नाट्य से भिन्न है।

पूर्व कथन अनुसार नाट्य रसों पर आश्रित है और नृत्य भाव

पर। इन दोनों की भिन्नता चार प्रकार की है- विषयभेद, स्वरूपभेद, कर्तृभेद और संज्ञाभेद।

नृत्यः-

प्रथम विषय भेद की दृष्टि से नाट्य रस पर आश्रित है और नृत्य भाव पर आश्रित। द्वितीय स्वरूप भेद की दृष्टि से नृत्य शब्द नृत् धातु से बनता है, जिसका अर्थ है गात्रविक्षेप अर्थात् शरीर का संचालन। नृत्य में आंगिक अभिनय अधिक होता है। इसके विपरीत नाट्य में चारों प्रकार के अभिनय होते हैं। तृतीय है कर्तृभेद की दृष्टि से- नाट्यकर्ता को नट कहा जाता है और नृत्य कर्ता को नर्तक। चतुर्थ है संज्ञा भेद की दृष्टि से- लोक में भी इस नृत्य में दर्शनीयता है ऐसा व्यवहार किया जाता है क्योंकि नृत्य केवल देखा जा सकता है उसमें कथोपकथन जैसा सुनने के लिए कुछ भी नहीं होता। वृत्तिकार धनिक के अनुसार - 'रसाश्रयान्नाट्याद्भावाश्रयं नृत्यमन्यदेव। तत्र भावाश्रयमिति विषयभेदात् नृत्यमिति नृतेर्गात्रविक्षेपार्थत्वेन आंगिकबाहुल्यात् तत्कारिषु नर्तकव्यापदेशात् लोकेपि च प्रेक्षणीयकम् इति व्यवहारात् नाटकादे.....।।

उक्त आधार पर नाट्य नृत्य से भिन्न वस्तु है। अतः दशधैव दस ही रूपक हैं। इस प्रकार का ग्रंथकार धनंजय कृत अवधारणा श्रीगदित के संबंध में भी नितांत समुचित है- ' तद्भेदत्वात् श्रीगदितादेर्नावधारणानुपपत्तिः।'

नाटक-

वस्तुतः नाटक आदि रूपक भाव मात्र पर आश्रित नहीं होते, वे

रस परक होते हैं- दशधैव रसाश्रयम्। रस की निष्पत्ति समस्त काव्य के उस वाक्यार्थ से होती है जो काव्य में प्रयुक्त पदों के अर्थ रूप विभाव अनुभाव तथा व्यभिचारी भावों के संसर्ग से युक्त होता है।यहां ध्यातव्य है कि नाटक आदि रूपों में वाक्यार्थ का अभिनय होता है ,भाव का नहीं। इसलिए नाट्य रसाश्रय है। इसकी निष्पत्ति पदों की समष्टि रूप वाक्य में होती है। नाटकादि च रसविषयम्। रसस्य च पदार्थाभिभूतविभावादिकसंसर्गात्मकवाक्यार्थरूपत्वाद्वाक्यार्थाभिनयात्मकं रसाश्रयमित्यनेन दर्शितम्।'

नाट्य-

नाट्य शब्द 'नट अवस्कन्दने' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है कुछ -कुछ चलना।इसलिए नाट्य में सात्विक अभिनय की प्रचुरता रहती है। यद्यपि इसमें स्वल्प मात्रा में आंगिक क्रिया अवश्य होती है किंतु सात्विक अभिनय की बहुलता होती है। इसीलिए नाट्याभिनय करने वाले को नट कहा जाता है। नाट्यमिति नट अवस्कन्दने नटेः किंचित् चलनार्थत्वात् सात्विकबाहुल्यम्। अत एव तत्कारिषु नटव्यापदेशः।'

यथा नृत्य और नृत्त दोनों में गात्रविक्षेप समान रूप से रहता है।दोनों में समान रूप से शरीर का संचालन होता है फिर भी दोनों में भिन्नता है क्योंकि नृत्य में अनुकरण होता है और नृत्त में नहीं। इसी प्रकार वाक्यार्थ रूप अभिनय वाले नाट्य से पदार्थ रूप अभिनय वाला नृत्य भी भिन्न है-' यथा च गात्रविक्षेपार्थत्वे समानेप्यनुकारात्मकत्वे न नृत्तादन्यन्नृत्यं

वाक्यार्थाभिनयात्मकान्नाट्यात् पदार्थाभिनयात्मकमन्यदेव नृत्यमिति।'

नाट्य और नृत्य में साम्य और वैषम्य इस प्रकार समझा जा सकता है।---

*भेदकतत्व (विषयभेद)

नाट्य 1. यह रसाश्रित होता है।

नृत्य 1. यह भावाश्रित होता है।

नाट्य 2. इसमें अवस्था का अनुकरण होता है।

नृत्य 2. इसमें भाव का अनुकरण होता है।

*भेदकतत्व (स्वरूप भेद)

नाट्य 1.इसमें सात्विक अभिनय की प्रचुरता होती है।

नृत्य 1. इसमें आंगिक अभिनय की प्रचुरता होती है।

नाट्य 2. इसमें चारों तरह के अभिनय पाए जाते हैं।

नृत्य 2. इसमें केवल आंगिक अभिनय पाया जाता है।

*भेदकतत्व (कर्तृभेद)

नाट्य 1. अभिनय कर्ता को नट कहा जाता है

नृत्य 1. नृत्य के कर्ता को नर्तक कहा जाता है।

नाट्य 2. यह नाट्य कहलाता है।

नृत्य 2. यह नृत्य प्रेक्षणीयक कहलाता है।

नाट्य 3. नाट्या में श्रवणीय तत्व कथोपकथन होता है नाट्य दृश्य के साथ श्रव्य भी होता है।

नृत्य 3. नृत्य में श्रवणीय कुछ भी नही होता यह केवल दर्शनीय होता है।

नाट्य 4. इसमें वाक्यार्थ का अभिनय किया जाता है।

नृत्य 4. नृत्य में पदार्थ का अभिनय किया जाता है।

नाट्य 5. इसमें भाव की चरम परिपोष सीमा अर्थात् रस की परिपुष्टि होती है।

नृत्य 5. नृत्य में केवल भावों की अभिव्यंजना मात्र होती है।

इस कारण से नाट्य को दस ही प्रकार का माना गया है। यहां भाण नृत्य में आए भाण से भिन्न है। यहां भाण रूपक का एक भेद रूप में गृहीत है। अतः रुपक दस ही प्रकार का माना जाता है।